By:- Sunita Kumari
Dept. of History
J.N.C. Madhubani

B.A. (H) History
Deg. II
Paper. IV

Analyse the rebellion of 1832 in Malaysia.

मलेशिया (मलाया) में 1832 के विद्रोह का विश्लेषण

स्याम की खाड़ी के दक्षिण-पूर्व में स्थित मलाया को मलेशिया के नाम से भी जाना जाता है। 53 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाले इस प्रायद्वीप के मध्य में चार हजार से आठ हजार फुट ऊंची पर्वत श्रृंखलाएँ हैं। नीचे तराई के मैदान हैं। यूरोप, पश्चिमी एशिया और भारत से पूर्वी एवं दक्षिणी-पूर्वी एशिया को जानेवाले मार्गों में सबसे छोटा मार्ग मलाया के जलडमरूमध्य से होकर जाता है। स्पष्ट है कि मलाया प्रायद्वीप पर प्रभुत्व होने से किसी भी देश के लिए पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी एशिया में अपना प्रभाव स्थापित करना अत्यन्त सरल होता है। मलाया की दूसरी विशेषता यह थी कि यह क्षेत्र टिन एवं रबर के उत्पादन के लिए अतीव प्रसिद्ध था। यही कारण था कि सोलहवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही यूरोपियनों ने मलाया प्रायद्वीप में अपने प्रभुत्व को स्थापित करने का प्रयत्न किया।

मलाया में यूरोपियनों का आगमन:- मलाया में प्रवेश करने वाले यूरोपियनों में सबसे पहले पुर्तगाली ही थे, जिन्होंने 1509 ई. मलाया में अपना कदम रखे। 1511 ई. में पुर्तगालियों ने मलक्का में अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया और 1641 ई. तक अपने प्रभाव को मलक्का में बनाए रखा। पुर्तगालियों को मलक्का में प्रभाव स्थापित होते-होते सुमात्रा के आक्रामक राज्य अचेह की आक्रामक गतिविधियों का सामना करना पड़ा। 1537 ई. में अचेह का प्रथम आक्रमण मलक्का में हुए। अचेह राज्य केवल मलक्का में केवल मलक्का में अपने प्रभुत्व को स्थापित नहीं करना चाहता था, वरन वह सम्पूर्ण मलाया को अपने आधिपत्य में

लेना चाहता था। अचेह के घात-प्रतिघातों के पश्चात भी पुर्तगाली जैसे-तैसे 1641 तक अपने प्रभुत्व को मलक्का में कायम रखने में सफल हुए, परन्तु 17वीं शताब्दी में डचों की शक्ति का सामना करना पड़ा। डचों ने 1596 ई० में जावा में अपना प्रभुत्व स्थापित कर 1633 ई० तक मलाया के राज्यों में हस्तक्षेप करना आरम्भ कर दिया था। अपनी आक्रामक गतिविधियों से उन्होंने 1641 में पुर्तगालियों का मलक्का से आधिपत्य समाप्त कर दिया और अपना प्रभुत्व कायम किया। डचों की शक्ति को भी उस समय जबरदस्त चुनौती का सामना करना पड़ा, जबकि ईस्ट-इण्डिया कम्पनी ने 1786 ई० में पेनांग द्वीप पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। अंग्रेजों ने जहाँ 1795 ई० में मलक्का अपने आधिपत्य में मलक्का अपने आधिपत्य में लेने में सफलता प्राप्त की वहीं 1819 ई० में सिंगापुर में अपना अड्डा भी कायम कर लिया। 6 फरवरी, 1819 ई० को हुसैन को सिंगापुर का सुल्तान बनाया गया। हुसैन ने कम्पनी के साथ एक समझौता किया, जिसके अनुसार कंपनी का एक गवर्नर सिंगापुर में रहेगा। ईस्ट इण्डिया कंपनी को सिंगापुर में कारखाना खोलने की अनुमति प्रदान की गई। साथ ही हुसैन प्रतिवर्ष पाँच हजार डालर कंपनी को देगा। 1824 ई० में डचों को विवश होकर कंपनी से संधि के लिए बाध्य होना पड़ा। इसके बाद मलक्का, सिंगापुर एवं पेनांग पर अंग्रेजों का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया गया। 1826 ई० में मलक्का और सिंगापुर का प्रशासन पेनांग से संचालित होने लगा।